प्रवाह

शांति की प्रवाह

वह सफ़ेद झंडा, जो हवा में लहराता था
जो शांति की फूलों को खिलाता था
उस सफ़ेद पंछी की आँचल में खून की निशानी थी
जहाँ मिटाई गई शांति की कहानी थी

जब सफ़ेद झंडे पर गोलियों की बारिश हुई
तब लोगों की चीखों में जीने की गुज़ारिश हुई
शांति की गीतगानेवाले संघ अब कहाँ ?
शांति पाने की जंग अब यहाँ

होता है शासन में युद्ध माँगनेवाले
होता है शांति की भीख माँगनेवाले
चलने से पहले ही थम गई वह नन्ही साँसें
जंग की आग ने बुझा दिया मासूम आँसें

हमें नदी तोड़नी है शांति की प्रवाह को
नदी तो, देखना पड़ेगा खून की बहाव को
दिखते नहीं गिरने के खून के रंग
लगा है लोगों के मन में युद्ध से जंग

देखा है चुल्हें में नारी को जीवन काटते
देखा है उसी आग में उसकी सपनों को ~~बिकरते~~ जलते
न जाने कितनों ने अपने अरमान सजाया था
न जाने कितनों ने नई आसमान को समाया था

कब ये संसद दुशासन के दरबार में बदला ?
न जाने कितने देशद्रोही कर्मचारियों को पाला
वह राजनेता अब कहाँ, जो लोगों के लिए है बना
उनकी सफ़ेद कपड़ों में दाग है घना

इस दुनिया में अब कोई शांति न पाता
इस जगत में अब कोई गाँधी न रहता
देखा है युद्ध के मार्ग में लोगों को मरते,
शांति के मार्ग में लोगों को जीतते

मणिपूर में नारी की इज़्ज़त को छीनते देखा,
वही जगह कई फ़िजूल चर्चाओं को गुँजते भी
भटक गया कई लोग शांति की चाह में
पर अक्सर अटक गया युद्ध की राह में

हम वह चिड़िया नही जो उड़ना छोड़ देगें
जो आगे बढ़ना छोड़ देगें
तो, एक ओर बारूड़ो शांति की तलाश में
उस शांति की प्रवाह की गुज़ारिश में